2

कलीसिया ज़्या नहीं है

''अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूं, जो तुज़्हारे लिए उठाता हूं, और मसीह के ज़्लेशों की घटी उस की देह के लिए, अर्थात कलीसिया (या चर्च) के लिए, अपने शरीर में पूरी किए देता हूं। जिस का मैं परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार सेवक बना, जो तुज़्हारे लिए मुझे सौंपा गया, ताकि मैं परमेश्वर के वचन का पूरा पूरा प्रचार करूं। ... जिस का प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को जता देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यज़्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें'' (कुलुस्सियों 1:24-28)।

छह वर्ष से कुछ अधिक पहले मेरा एक प्रिय मित्र मसीही बना था। एक बालक के रूप में उसे मसीही परिवार में पालन-पोषण और युवावस्था के वर्षों में मसीही मित्रों से उत्साह पाने के लाभ नहीं मिल पाए थे। ज़्योंकि मसीही बनने के समय वह लगभग तीस वर्ष का था इसलिए उसे मालूम था कि इतने वर्षों में जो कुछ उसने नहीं सीखा था वह उसके लिए सीखना आवश्यक है। मेरे जानकारों में से इस आदमी ने जल्दी ही सबसे अधिक आत्मिक उन्नति की। उसे देखकर ऐसा लगता था जैसे वह परमेश्वर के राज्य में बालक के रूप में नहीं बल्कि ''युवक'' के रूप में हम सबकी तरह पैदा होते ही हमारे जैसा था। आत्मिक प्रश्नों पर उसकी सूझबूझ हमेशा हमारे लिए सहायक और व्यावहारिक बुद्धि देने वाली थी। एक वार्तालाप में कलीसिया के सज़्बन्ध में उसने ऐसी बात कही जिसे कहने से मैं हिचकिचाता हूं। मैंने उससे पूछा था कि मसीही लोगों को गैर मसीहियों से कलीसिया के विषय में ज़्या बताना चाहिए। उसने कहा, ''उन्हें बताओ कि कलीसिया ज़्या नहीं है। इससे मुझे नये नियम की कलीसिया को समझने में सहायता मिली और मैं यह देखने लगा कि कलीसिया ज़्या नहीं है।'' मेरा मानना है कि इस भाई की सलाह मेरे लिए उपयोगी है।

किसी विषय का विश्लेषण करने और उस पर काम करने के लिए तुलनाएं और रूपक बहुत अच्छे ढंग हैं। गलत शिक्षा को सामने रखकर उसकी तुलना करने से परमेश्वर की सच्चाई को अधिक स्पष्टता से देखा जा सकता है। मज़ी 23 अध्याय में यीशु ने अपने चेलों को सिखाने के लिए कि उन्हें कैसे नहीं बनना चाहिए, शास्त्रियों और फरीसियों की मिसाल दी। उसने कहा, ''शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं। इसलिए वे तुम से जो कुछ कहें वह करना, और मानना; परन्तु उन के से काम मत करना; ज़्योंकि वे कहते तो हैं पर

करते नहीं'' (मज़ी 23:2, 3)।

नया नियम इस विषय पर बिल्कुल स्पष्ट है कि कलीसिया ज़्या है।[1] यह उन लोगों से बनी एक आत्मिक देह है जिन्होंने मसीह के सुसमाचार को मान लिया है और इस प्रकार, *उसके लोग बन गए हैं* और किसी स्थानीय जगह पर *उसके लोगों के रूप में* आराधना और कार्य कर रहे हैं। उन्होंने मसीह का नाम पहना है और उसे प्रभु मानते हैं। वे एक जीवित इमारत हैं जिसमें जीवित परमेश्वर का आत्मा वास करता है। इस तरह से बनी देह परमेश्वर, मसीह और पवित्र आत्मा के साथ गूढ़ अर्थात चलती रहने वाली संगति में उसके वचन की आज्ञा मानकर बने रहते हैं।

आइए इस पृष्ठभूमि के विपरीत कि कलीसिया ज़्या है, ध्यान से देखते हैं कि कलीसिया ज़्या नहीं है। आशा है कि इससे हम अधिक अच्छी तरह से देख पाएंगे कि परमेश्वर ने नये नियम की कलीसिया को कैसा बनाना चाहा था।

ईंट पत्थरों की इमारत नहीं

पहली बात तो यह है कि चर्च या कलीसिया कोई ईंट-पत्थरों की बनी इमारत या भौतिक ढांचा नहीं है। जब चर्च बिल्डिंग के पास से गुज़रता हुआ कोई कहता है कि, ''वह चर्च है!'' तो नि:संदेह वह व्यज़्ति गलत कह रहा होता है। चर्च या कलीसिया कोई ईंट-पत्थरों और गारे की बनी इमारत नहीं है। कलीसिया तो मसीही लोगों अर्थात जीवित पत्थरों से बनती है (1 कुरिन्थियों 12:27; 1 पतरस 2:5)।

कलीसिया अर्थात चर्च इकट्ठा होने और आराधना करने के लिए ईंट-पत्थरों की इमारत का इस्तेमाल तो कर सकती है लेकिन स्वयं यह लकड़ी, धातु, पत्थर या शीशा नहीं है। चर्च एक जीवित वस्तु है। पौलुस ने इफिसुस के मसीहियों को बताया, ''तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो'' (इफिसियों 2:22)। पतरस ने कहा, ''तुम भी आप जीविते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो ...'' (1 पतरस 2:5)।

चर्च या कलीसिया की एकमात्र भौतिक विशेषता वे मानवीय देहें हैं जिनमें उन लोगों की जिनसे कलीसिया बनती है, आत्माएं वास करती हैं। एक मानवीय प्राणी वह मानवीय आत्मा है जो भौतिक या शारीरिक देह में रहती हैं। मसीही बनने पर वह प्राणी कलीसिया बन जाता है। कलीसिया के रूप में वह उस भौतिक देह में चलता, आराधना करता, इच्छा करता और कार्य करता है। कलीसिया अर्थात चर्च का दिखाई देने वाला एकमात्र गुण यही है।

कभी-कभी कोई कहता है, ''मैं चर्च जा रहा हूं।'' साफ़ है कि उसके कहने का अर्थ होता है कि ''मैं कलीसिया की सभा में जा रहा हूं।'' नये नियम में ''कलीसिया या चर्च'' शज़्द का इस्तेमाल सभा के लिए हुआ है (1 कुरिन्थियों 11:18); लेकिन यदि हम नये नियम में मसीह की आत्मिक देह के लिए पदनाम के रूप में ''चर्च'' शज़्द ढूंढ़ रहे हैं तो यह कहना गलत होगा कि ''मैं चर्च जा रहा हूं।'' हम चर्च नहीं जा सकते ज़्योंकि चर्च तो हम हैं! चर्च अर्थात कलीसिया या मसीही लोग आराधना और अध्ययन के लिए सभा तो कर

सकते हैं, परन्तु मसीही व्यक्ति किसी के घर जाकर उसमें से निकलने की तरह कलीसिया में जाकर आराधना के लिए चर्च का भाग बनकर मसीह की देह से बाहर नहीं जा सकता।

क्या हम इस बात से प्रसन्न नहीं हैं कि चर्च ईंट-पत्थरों से बनी इमारत नहीं है ? यदि यह ईंट-पत्थरों की इमारत होती तो यह केवल स्थानीय, सीमित, बेजान और प्रेम रहित होती। यदि आराधना केवल किसी कैथेड्रल में ही हो सकती तो आराधना केवल किसी विशेष स्थान पर ही हो सकती थी। इसके विपरीत चर्च या कलीसिया मसीह के लहू के द्वारा छुड़ाए हुए लोगों के रूप में दूसरे सब लोगों और संसार में हर जगह मसीह का प्रभाव पहुंचाती है। यह आराधना को मसीही लोगों द्वारा अपने स्वर्गीय पिता की आराधना के लिए स्थान और समय चुनने के योग्य बनाती है। कलीसिया वहां जाती है जहां मसीही लोग जाते हैं, क्योंकि चर्च या कलीसिया तो मसीही लोगों को ही कहा जाता है।

हमें चाहिए कि हम जो कुछ कहते और करते हैं उसमें सावधानी बरतें क्योंकि हम मसीह की कलीसिया अर्थात चर्च ऑफ़ क्राइस्ट के रूप में बात करते और काम करते हैं। हम उसका चर्च केवल आराधना के लिए इकट्ठे होने के समय ही नहीं बनते बल्कि हम जहां भी जाएं उसका चर्च या कलीसिया ही हैं। उसने हमें बुलाकर अपने लहू के द्वारा शुद्ध करके ''अपने लिए एक लोग'' बनाने के लिए अलग किया है। मसीह की देह मृत या निर्जीव वस्तु नहीं बल्कि क्षमा पाए हुए अर्थात चुने हुए लोगों से बना एक जीवित परिवार है। उसकी कलीसिया उसकी संगति के लिए एक आत्मिक वंश, पवित्र याजकाई, अर्थात एक समाज है (1 पतरस 2:9)।

मित्रों की सोसाइटी नहीं

दूसरा, कलीसिया कोई सोशल क्लब नहीं है। यह मित्रों को मिलाने और दूसरों के साथ आनन्दपूर्ण मेल से कहीं बढ़कर है।

कलीसिया में तुरंत लाभ संगति का ही मिलता है, लेकिन कलीसिया संगति से कहीं बढ़कर है। मन परिवर्तन के समय व्यक्ति को आत्मिक मृत्यु से उठाकर मसीह की देह में दूसरे मसीहियों के साथ जीवित किया जाता है। पौलुस ने लिखा:

> परन्तु परमेश्वर ने, जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया। जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है)। और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया (इफिसियों 2:4-6)।

परमेश्वर ने हम में से जितनों को भी अपने पुत्र के बलिदान के द्वारा छुड़ाया है, उन्हें उसके आत्मिक परिवार में गोद ले लिया गया है और प्रेम से उसने ''अपने पुत्र के आत्मा को, जो हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है हमारे हृदय में भेजा है'' (गलतियों 4:6)। परमेश्वर के परिवार के रूप में, कलीसिया के एक दूसरे के साथ सम्बन्ध मजबूत होते हैं, पर यह

संगति हमारे पारिवारिक सज़्बन्धों में से ही परमेश्वर के साथ बढ़ती है। प्रेरित यूहन्ना ने लिखा है, ''जिसका यह विश्वास है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है और जो कोई उत्पन्न करने वाले से प्रेम रखता है, वह उस से भी प्रेम रखता है, जो उससे उत्पन्न हुआ है'' (1 यूहन्ना 5:1)।

मान लो कि जब आप बच्चे ही थे तो आपके माता-पिता की मृत्यु हो गई और मजबूरी में आपको अनाथालय में रहना पड़ा। वहां आपको ''बे-घर'' शज़्द के सही अर्थ अकेलापन, खालीपन, और अलग होने का पता चला। कई साल बाद, आपको भूल चुका है कि अपना परिवार होने से कैसा लगता है। आइए मान लेते हैं कि एक दिन आपको किसी बहुत अच्छे परिवार ने गोद ले लिया। आपको स्नेह तथा परिचय की एक नई दुनिया मिल गई। तुरन्त ही आपको एक पिता मिल गया जिसने आपसे प्रेम करना और आपको सज़्भालना है, आपको मां का प्रेमपूर्ण लाड़ मिलता है और परिवार के मोह और समर्थन के लिए भाई और बहन भी मिल गए। उस गोद लेने वाले परिवार के साथ आप हंसी खुशी से रहने लगे और परिवार में रहने के कारण आपका भविष्य सुरक्षित हो गया। समय के साथ-साथ परिवार से आपका प्रेम बढ़ता गया। इससे ज़्या हुआ? ज़्या आप किसी सामाजिक ज़्लब की तरह मित्रता और संगठन के द्वारा एक दूसरे के निकट आए? नहीं। आपको इस परिवार ने गोद लिया था। आप इस परिवार का एक अभिन्न अंग बन गए, और परिवार के साथ एक होने के कारण आपको इस परिवार की संगति और आशिषें मिल गईं।

परमेश्वर के पास कोई मृत देह या निर्जीव वस्तु नहीं
बल्कि क्षमा किए हुए
अर्थात चुने हुए लोगों से बना
एक जीवित परिवार है।

बिल्कुल, ऐसा ही परिवर्तन नये बनने वाले मसीही में आता है। उसे एक नये परिवार अर्थात परमेश्वर के परिवार में लाया गया है। पौलुस ने इसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए तो ''लेपालक'' शज़्द का इस्तेमाल किया है (इफिसियों 1:5)।

कोई व्यज़्ति अपना जीवन बदले बिना किसी सामाजिक ज़्लब में शामिल हो सकता है। सोशल या सामाजिक ज़्लब व्यापार बढ़ाने के लिए केवल एक ''अतिरिज़्त'' ढंग है। इसका लाभ न होने पर हम इसे कभी भी छोड़ सकते हैं। यह हमारे मनोरंजन व आनन्द के लिए होती है। लेकिन एक परिवार का सदस्य बनना बिल्कुल ही अलग बात है। आप परिवार में आते या इसके सदस्य बनते हैं और परिवार आपके जीवन में। यह आपके जीवन के लिए केवल एक ''अतिरिज़्त आशीष'' नहीं है बल्कि आप स्वयं परिवार का हिस्सा बन जाते हैं। आपको इसका नाम मिलता है, इसके सभी सदस्य आपके बन जाते हैं, और आप उनके। यहां पर आप जीवन में किसी भी दूसरे सज़्बन्ध से एक दूसरे से अधिक जुड़ जाते हैं।

परमेश्वर के परिवार में नया जन्म लेकर प्रवेश किया जाता है (यूहन्ना 3:5)। आप

किसी ज़्लब की सदस्यता की तरह इसे ''जॉयन'' नहीं कर सकते ज़्योंकि आप इसमें जन्म लेते हैं या आपको गोद लिया जाता है। कोई भी व्यज़्ति बिना परिवर्तित हुए उसके परिवार में दाखिल नहीं हो सकता। जब हम मसीह के बनते हैं तो हम उसका नाम अपना लेते हैं और ''*मसीहा* अर्थात *Christ*-ians'' कहलाते हैं। हमारे सज़्बन्ध आचरण और आकांक्षाएं अलग हो जाती हैं। हम एक परिवार बन जाते हैं, जिसकी अगुआई और पोषण परमेश्वर करता है, वही हमारा पालन-पोषण, हमारे लिए प्रबन्ध और हमारी सुरक्षा करता है। हम यीशु के लहू से बंधे हुए बच्चों के रूप में मिलकर रहते, आराधना करते, काम करते और संगति करते हैं।

कोई मानवीय सुझाव नहीं

तीसरा, कलीसिया मानवीय सुझाव ही नहीं है। न तो इसका विचार मनुष्य की ओर से था और न मनुष्य ने इसका आविष्कार किया है। यह न तो मनुष्य द्वारा संचालित है और न ही मनुष्य द्वारा स्थापित।

कलीसिया परमेश्वर का विचार है और उसी की रचना है। अपने वचन से संसार को अस्तित्व में लाने से पूर्व, उसने मनुष्य के उद्धार के लिए क्रूस और कलीसिया की योजना बना ली थी। मनुष्य द्वारा पहला पाप करने से भी प्रथम उसने क्षमा की बात सोच ली थी। पतरस लिखता है कि बीते अनन्तकाल में, प्रथम तारे या घास की पज़ी, प्रथम तितली या प्रथम मानवीय जीव बनाने से भी पूर्व परमेश्वर ने यह ठहरा दिया था कि वह मसीह की देह में रहने वालों का उद्धार करेगा। इसलिए मसीही लोग ''परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार, आत्मा के पवित्र करने के द्वारा'' यीशु की आज्ञा मानने और उसके लहू के छिड़के जाने के लिए चुने गए हैं (1 पतरस 1:1, 2)। प्रकाशितवाज़्य 13:8 में परमेश्वर के पवित्र लोगों अर्थात Saints को जिन्हें मेमने के बहुमूल्य लहू से छुटकारा दिया गया है, का वर्णन जगत की नींव से जीवन की पुस्तक में लिखे के रूप में किया गया है। परमेश्वर ने ठहराया कि एक-एक को नहीं बल्कि एक समूह के रूप में उन लोगों को जो क्रूस के द्वारा उद्धार को चुनते हैं, उद्धार दिया जाए। कलीसिया मसीह के लहू बहाए जाने का परिणाम थी, और है। यीशु ने कहा कि जो लोग मसीह के लहू में धोए गए हैं उन्हें राज्य बना दिया गया है (प्रकाशितवाज़्य 1:5, 6)।

यह विचार हमारे मनों में एक मुज़्य सच्चाई को ज्वलंत करता है: यदि परमेश्वर ने जगत के आरज़्भ से पूर्व मसीह का बलिदान चाहा था, और यदि कलीसिया मसीह के लहू से सृजी गई है, तो इसका अर्थ यह हुआ कि कलीसिया परमेश्वर का अनन्त उद्देश्य अर्थात उसकी सनातन मंशा थी। इसलिए हमें इफिसियों 3:10, 11 में इसी सच्चाई के पौलुस के उल्लेख से हैरान नहीं होना चाहिए:

> ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर स्वर्गीय स्थानों में है प्रगट किया जाए। उस सनातन मंशा के

अनुसार, जो उस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी।

गलातिया के कुछ लोगों ने मसीह के प्रेरित के रूप में पौलुस के अधिकार को नकार दिया था, जिस कारण वे उसके संदेशों को परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया नहीं मान रहे थे। उसने अपनी प्रेरिताई के विरुद्ध उनके आरोप का उज़र उनके नाम लिखे पत्र के आरज़्भ में दिया: ''पौलुस की, जो न मनुष्यों की ओर से, और न मनुष्य के द्वारा, वरन यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के द्वारा, जिसने उस को मरे हुओं में से जिलाया, प्रेरित है'' (गलातियों 1:1)। संक्षिप्त शज़्दों में, पौलुस का तर्क था कि उसका प्रेरित होना न तो किसी मनुष्य की ओर से और न ही मनुष्य के अधिकार से था बल्कि परमेश्वर की ओर से था। मानो वह कह रहा था, ''मुझे स्वयं यीशु मसीह के द्वारा स्वर्ग से प्रेरित ठहराया गया है।''

जो बात पौलुस ने अपने प्रेरित होने के बारे में कही–वही कलीसिया के विषय में भी कही जा सकती है कि कलीसिया किसी मनुष्य की ओर से नहीं आई। यह परमेश्वर की ओर से है। इसकी योजना स्वर्ग में बनाई गई, घोषणा स्वर्ग की ओर से हुई, और स्वर्ग की ओर से ही यह भेजी गई। इसका विचार परमेश्वर के मन में पैदा हुआ, इसकी योजना यीशु मसीह के द्वारा क्रूस पर उसकी मृत्यु में और पिन्तेकुस्त के दिन आश्चर्यकर्म से पवित्र आत्मा के बहाए जाने से लागू हुई। लोग कलीसिया में प्रवेश करते हैं और प्रभु के वचन से और उन्हें मिले आत्मा से उन्हें इसमें रखा जाता है। यह मसीह की है; इसलिए किसी मानवीय सिर (अर्थात प्रधान) या हाथ से इसकी महानता में सुधार नहीं किया जा सकता, और इसकी महिमा मनुष्य के दिमाग या शज़्ति से नहीं बढ़ाई जा सकती।

जब कोई कलीसिया में प्रवेश करता है, तो वह किसी मानवीय संगठन या डिनोमिनेशन में प्रवेश नहीं कर रहा होता। परमेश्वर ने हमें अपनी अनन्त आशा सांसारिक बुद्धि, ऊर्जा, ढंगों या सामर्थ पर रखने के लिए नहीं कहा है। उसने हमें परमेश्वर द्वारा बनाई गई मसीह की देह में प्रवेश करने के लिए कहा है, जिसके पीछे और जिसमें परमेश्वर की बुद्धि है, ज़्योंकि यह उसकी सामर्थ से बनाई गई और उसके अनुग्रह और अगुआई से अनन्तकाल के लिए सुरक्षित एक आत्मिक देह है।

इस कलीसिया में प्रवेश करने का एकमात्र ढंग पवित्र बाइबल में प्रकट किए गए सुसमाचार को मानना है (2 थिस्सलुनीकियों 1:7–9)। मसीह की वफादार कलीसिया बने रहने का एकमात्र ढंग पवित्र बाइबल में मसीही जीवन के लिए बताई गई दैनिक बातों को मानना है (1 यूहन्ना 5:2, 3)। इस कलीसिया का धर्मसार बाइबल के अलावा और कोई नहीं है और न ही मसीह के अलावा इसका कोई सिर है।

कोई ईश्वरीय विकल्प नहीं

चौथा, कलीसिया किसी नाकाम हुई योजना का विकल्प नहीं है। यह किसी बड़े संस्थान, जो प्रभु के मन में था परन्तु संसार में पाप के कारण बन नहीं पाया हो, के स्थान पर नहीं दी गई है।

कलीसिया का युग वह युग है जिसकी ओर बढ़ने के लिए परमेश्वर ने समय के प्रारम्भ से ही काम करना शुरू कर दिया था। भविष्यवक्ताओं ने बार-बार राज्य के आने की भविष्यवाणियां की थीं। यीशु ने पृथ्वी पर अपनी सेवकाई का आरम्भ इस घोषणा के साथ किया कि ''समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो'' (मरकुस 1:15)। क्रूस के निकट आ जाने पर, यीशु ने अपने प्रेरितों से कहा:

> और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा: और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा: और जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा (मत्ती 16:18, 19)।

अपने राज्य की स्थापना से कुछ दिन पहले ही, यीशु ने उन्हें बताया था कि ''थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे'' (प्रेरितों 1:5)। पिन्तेकुस्त के दिन, पवित्र आत्मा प्रेरितों पर बहाया गया और उन्हें आत्मा की सामर्थ तथा प्रभाव में बपतिस्मा दिया गया था। प्रेरितों 2:11-15 में, पतरस ने इस आश्चर्यकर्म की घटना को योएल नबी की उस भविष्यवाणी का पूरा होना बताया (योएल 2:28-31), जिसमें ''अंत के दिनों,'' अर्थात कलीसिया के युग अर्थात परमेश्वर के राज्य के युग के आरम्भ की भविष्यवाणी की गई थी। इस प्रकार, कलीसिया जो परमेश्वर के राज्य का सांसारिक रूप है, परमेश्वर की समयसारणी और उसके ढंग से स्थापित हुई है।

संसार की अधिकतर नहीं, तो बहुत सी डिनोमिनेशनों या साम्प्रदायिक कलीसियाओं द्वारा फैलाई गई एक प्रसिद्ध धार्मिक गलती को premillennialism (प्री-मिलेनियलिज़्म) अर्थात हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा कहा जाता है। लगभग पूरी तरह से प्रकाशितवाक्य 20:1-4 की प्रतीकात्मक भाषा पर आधारित, ''pre'' का अर्थ ''पूर्व'' और ''millennial'' का अर्थ ''एक हज़ार वर्ष'' है। पवित्र शास्त्र से बाहर की इस शिक्षा में दावा किया जाता है कि मसीह समय के अंत में आकर, अपना राज्य स्थापित करेगा। इसमें यह तर्क दिया जाता है कि राजा के रूप में यीशु यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन पर बैठकर एक हज़ार वर्ष तक इस पृथ्वी पर अपने राज्य पर शासन करेगा। इस शिक्षा को मानने वाले लोग इस्राएल देश के इस समय फिर से पलिश्तीन देश बन जाने की और पृथ्वी के सब देशों पर शासन करने की आशा करते हैं। उनका मानना है कि 70 ई. में टाइटस द्वारा नष्ट किया गया मन्दिर फिर से बनाया जाएगा और लैव्यव्यवस्था का बलिदान देने का सिस्टम फिर से लागू होगा। *प्रिमिलेनियलिज़्म की शिक्षा का यह निष्कर्ष है कि यीशु पहली बार अपना राज्य स्थापित करने के लिए आया था, परन्तु उसके उस प्रयास को नकार दिया गया और राज्य के स्थान पर उसने कलीसिया स्थापित कर दी।* इसलिए प्रिमिलेनियलिस्ट या हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले कलीसिया को उस वास्तविक राज्य की जगह जिस की योजना बनाई गई थी, दिया गया विकल्प मानते हैं।

कलीसिया और राज्य के विषय में विचार के इस चतुर ताने-बाने में केवल एक ही कमी है और वह यह है कि यह शिक्षा झूठी है। यह परमेश्वर के वचन में से नहीं बल्कि मनुष्य की सजावटी शिक्षाओं से बनाई गई है। इसे एक-एक करके गलत सिद्ध करने के बजाय इफिसियों 3:11 में पौलुस द्वारा की गई घोषणा को देखना काफ़ी है कि कलीसिया परमेश्वर की सनातन मंशा है। एक ही वाक्य से, वह आयत इस भ्रांतिपूर्ण शिक्षा को पूरी तरह से झूठा ठहरा देती है। यहां छोटी सी सच्चाई बहुत बड़े झूठ को नष्ट कर देती है, की बात लागू होती है। पवित्र आत्मा के अनुसार कलीसिया परमेश्वर की योजना का उपांग अर्थात ''साथ जोड़ा गया'' नहीं बल्कि स्वयं एक योजना है।

विकल्प हमेशा निज़्नस्तर का, अर्थात उज़्म का स्थान लेने वाला होता है। आपका ध्यान याकूब की ओर नहीं जाता, जिसने अपने प्रेम, राहेल का हाथ मांगा था, परन्तु धोखे से उससे लिआह ज़्याह दी गई थी (उत्पज़ि 29:16-25) ? ज़्या आप कल्पना कर सकते हैं कि आपके विवाह के दिन उस स्त्री की जगह जिससे आप प्रेम करते हों कोई दूसरा विकल्प दे दिया जाए ?

हम याकूब से सहानुभूति रखते हैं ज़्योंकि हम जानते हैं कि नकल अर्थात बदली गई वस्तु से कभी संतुष्टि नहीं होती। प्रतिकृति के बजाय मूल कृति की ही इच्छा की जाती है। कलीसिया असली है न कि किसी का विकल्प।

यह बताकर कि नये नियम में कलीसिया राज्य की भविष्यवाणियों का शानदार ढंग से पूरा होना है, परमेश्वर हमें कलीसिया की सुन्दरता और इसके महत्व को दिखाता है। पौलुस ने कहा कि कलीसिया को यीशु ने ''वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र'' करके ''उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी'' किया है, ''जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो'' (इफिसियों 5:26ख, 27)।

ज़्या आप मेरे साथ इस बात से आनन्दित नहीं होंगे कि कलीसिया परमेश्वर की पहली पसन्द है न कि सबसे उज़्म का सहायक ? कलीसिया का भाग बनकर हम परमेश्वर की बुद्धिमज़ापूर्ण योजना और पापी मनुष्य के लिए उसके अनुग्रहकारी कार्य के फल का भाग बनते हैं। अभी ही रुककर धन्यवाद के साथ प्रार्थना में परमेश्वर की महिमा करें कि कलीसिया हमारे छुटकारे के लिए परमेश्वर की सनातन मंशा है न कि राज्य के आने तक उसका विकल्प।

सारांश

कलीसिया को देखकर ज़्या हमें इसमें वह बात मिलती है जो इसमें है नहीं ? कलीसिया ईंट-पत्थरों की इमारत या चर्च बिल्डिंग नहीं बल्कि मसीह की आत्मिक देह है। यह कोई सोशल ज़्लब नहीं बल्कि परमेश्वर का आत्मिक परिवार है जिसमें नया जन्म लेकर प्रवेश किया जाता है। यह किसी मनुष्य का सुझाव नहीं है बल्कि क्रूस के द्वारा परमेश्वर की योजना और इच्छा है। यह उस वास्तविक अभिप्राय का जो परमेश्वर के मन में था विकल्प नहीं

बल्कि राज्य की भविष्यवाणियों और परमेश्वर की सनातन मंशा का पूरा होना है। जब कोई कलीसिया में प्रवेश करता है तो वह अनादि काल से बनाई गई परमेश्वर की शानदार योजना में प्रवेश करता है।

एक बच्चे से उसके घर आए अतिथियों ने उसका नाम पूछा। बच्चे ने उज़र दिया, ''मेरा नाम ज़्विट है।'' शंकित अतिथियों ने कहा, ''तुज़्हें कैसे मालूम कि तुज़्हारा नाम ज़्विट है ?'' बिना ऊपर देखे उसने कहा, ''जब भी लोग मुझे देखते हैं, वे कहते हैं, 'ज़्विट!' (जिसका अर्थ है छोड़ दे)'' उस छोटे बच्चे ने इतना नकारात्मक सुना था कि मन में, ही सही, लेकिन वह नकारात्मक बन गया था। उसका नाम ही ज़्विट बन गया था।

कलीसिया ज़्या नहीं है का अध्ययन करते हुए कि ऐसा ही खतरा हमारे आस-पास भी मंडरा सकता है। हमें चाहिए कि कलीसिया को ऐसे देखने के लिए जैसे यह ''नहीं'' का गट्ठा हो, अगुआई करने के लिए ऐसे अध्ययन की अनुमति न दें। एक मसीही व्यज़्ति दो पैरों पर चलने वाला ''विरोधी पक्ष'' ही नहीं है, जिसे केवल उसके विरोध के कारण जाना जाता है। नकारात्मक तो केवल सकारात्मक की ओर ध्यान दिलाने देने के लिए होते हैं। यह देखना कि कलीसिया ज़्या नहीं है यह सुनिश्चित करने और वह बनने में हमारी सहायता करता है कि कलीसिया ज़्या है।

कलीसिया के रूप में शिष्य, दास, अनुयायी के रूप में हम मसीह के हैं। हम उसकी इच्छा के प्रति वफादारी से समर्पण करके उसके प्रज़ुत्व को स्वीकार करते हैं। हम परमेश्वर, मसीह और पवित्र आत्मा की बात हर रोज मानकर अपने आज्ञाकारी विश्वास को दिखाते हैं। चाहे कलीसिया को हम परमेश्वर के राज्य, मसीह की देह, या परमेश्वर के परिवार के दृष्टिकोण से देख रहे हों, परन्तु मसीही व्यज़्ति का जवाब हमेशा आज्ञा मानने वाला विश्वास है। हम उसके वचन की गवाही और जीवन की गवाही में से देखते हैं कि हर पापी की सबसे बड़ी आवश्यकता आत्मविश्वास से भरोसा करके मसीह की कलीसिया का सदस्य बनना और जब तक वह हमें नहीं बुला लेता या वह स्वयं हमें लेने के लिए नहीं आता तब तक मसीह के सामने वफादारी से चलना है।

जब आपका विवाह राहेल के साथ हो सकता है तो लिआह को पाकर संतुष्ट न हो जाएं! आप वह सच्ची कलीसिया बन सकते हैं जिसकी स्थापना यीशु ने की थी!

पाद टिप्पणी

[1]यह अध्ययन ''कलीसिया'' की शृंखला की तीसरी पुस्तक है। इस शृंखला की दो अन्य पुस्तकें व्हट इज़ ''द चर्च''? और गॉड'स डिज़ाईन फ़ॉर ''द चर्च'' हैं, जिसमें दूसरी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद 'कलीसिया' के लिए परमेश्वर का नमूना छप चुका है। दोनों पुस्तकें लेखक द्वारा सरसी, आरकैंसा में छपवाई गई हैं। नये नियम की कलीसिया पर और विचार करने के लिए, इन दोनों पुस्तकों की सिफारिश की जाती है।

अध्ययन व चर्चा के लिए प्रश्न

1. कलीसिया जो नहीं है उस पर ध्यान देना ज़्यों सहायक है?
2. पवित्र शास्त्र में दी गई कलीसिया की संक्षिप्त परिभाषा बताएं।
3. आराधना के स्थान का कलीसिया से ज़्या सज़्बन्ध है?
4. कलीसिया या चर्च को ईंट-पत्थरों की इमारत न मानने में आपको ज़्या लाभ लगते हैं?
5. कलीसिया दूसरों से संगति से बढ़कर कैसे है?
6. किसी आत्मिक परिवार का सदस्य होने का ज़्या अर्थ है?
7. परमेश्वर के परिवार में कैसे प्रवेश किया जा सकता है?
8. पवित्र शास्त्र से सिद्ध करें कि कलीसिया परमेश्वर का विचार था न कि मनुष्य का।
9. पवित्र शास्त्र से सिद्ध करें कि कलीसिया आरज़्भ से ही परमेश्वर की योजना थी न कि किसी योजना के स्थान पर बनाया गया कोई संस्थान।
10. पवित्र शास्त्र से उन पदों को उद्धृत करें जो संकेत देते हैं कि कलीसिया भविष्यवाणी का पूरा होना है।
11. आज्ञा मानने वाला विश्वास ज़्या होता है?
12. सुसमाचार के प्रति हमारा हर रोज़ का जवाब ज़्या होना चाहिए?